Toppersnotes
Unleash the topper in you

EMRS (PGT)

हिन्दी

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

भाग – 3

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	खंड ख	
1.	सन्धि	1
2.	काव्यांश	28
3.	साहित्य का अर्थ,स्वरूप,उद्देश्य, साहित्य की विविध विधाएं	41
4.	काव्य रस	44
5.	शब्द शक्ति	57
6.	काव्य गुण	66
7.	काव्य दोष	70
8.	हिन्दी के रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	77
9.	अलंकार	87
	खंड ग	
10.	जन-संचार माध्यमों के लिए लेखन	110
11.	व्यवहारिक हिंदी का स्वरूप	133
12.	सृजनात्मक लेखन	146
13.	वार्तालाप की दक्षता की विकाय हेतु संवाद लेखन	164

1 CHAPTER सन्धि

सन्धि एवं सन्धि विच्छेद

परिभाषा:- जब दो वर्ण आपस में मिलते हैं एवं उनके मिलने से शब्द के उच्चारण एवं लेखन में परिवर्तन है। है तो उसे सन्धि कहा जाता है।

जैसे - पुस्तक + आलय = पुस्तकालय जगत् + ईश = जगदीश
नम: + ते = नमस्ते

यदि वर्णों के आपस में मिलने से उच्चारण एवं लेखन में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो उसे सन्धि न मानकर 'से माना जाता है।

जैसे- दुर + अवस्था = दुरवस्था युग + बोध = युगबोध
अन्तर् + आत्मा = अन्तरात्मा

सन्धि के भेद :- स्वर, व्यजन या विसर्ग में से जिन वर्णों का परस्पर मेल हो रहा है, उन वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद होते हैं-

1. स्वर सन्धि- स्वर + स्वर।
2. व्यंजन सन्धि –
   (i) व्यंजन + स्वर (ii) स्वर + व्यंजन (iii) व्यंजन + व्यंजन
3. विसर्ग सन्धि- विसर्ग + स्वर/व्यंजन

1. स्वर सन्धि- जब स्वर वर्ण के साथ किसी स्वर वर्ण का मेल होता है तो उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद माने जाते हैं :-
(i) यण् सन्धि (ii) अयादि सन्धि (iii) गुण सन्धि
(iv) दीर्घ सन्धि (v) वृद्धि सन्धि

यण् सन्धि

'यण्' सन्धि का संस्कृत में सूत्र है:- "इको यणचि"। इस सूत्र में तीन पद हैं-

इक्-	इ	उ	ऋ	लू
	↓	↓	↓	↓
यण्-	य्	व्	रु	ल्

अर्थात् यदि इ/उ/ऋ के बाद कोई असमान स्वर आता है तो इ/उ/ऋ के स्थान पर क्रमशः 'य्, व्, र्' आदेश हो जाता है।

नोट- 'ऌ' संस्कृत व्याकरण में 'स्वर वर्ण' माना जाता है, परन्तु हिन्दी में 'ऌ' वर्ण नहीं माना जाता है।

जैसे उदाहरण:-

प्रति + एक	सु + आगत	मात्राज्ञा	स्त्र्यागमन
प्र त् इ ए क	स् उ आगत	वधू + आगमन	पितृ + अनुमति
प्र त् य् ए क	स् व् आगत	वध् ऊ आगमन	पित् ऋ अनुमति
प्रत्येक	स्वागत	वध् व् आगमन	पित् र् अनुमति
मात् ऋ आज्ञा	स्त्र् ई आगमन		
मात् र् आज्ञा	स्त्र् य् आगमन		

नोट:- यहाँ इ/उ में ह्रस्व एवं दीर्घ दोनों स्वर सम्मिलित हैं।

यण् सन्धि युक्त पदों का विच्छेद करने के लिए याद रखने योग्य तीन बातें :-

यदि किसी शब्द में किसी आधे अक्षर के बाद य्/व्/र् लिखा हुआ हो और उस अंश का विच्छेद करना हो तो निम्न तरीका काम में ले सकते हैं-

1. सर्वप्रथम जिस आधे अक्षर के बाद य्/व्/र् लिखा हुआ हो, उस आधे अक्षर को पूरा लिख दो।
2. फिर य/व/र वर्ण की उपस्थिति के अनुसार उसके क्रमशः इ-ई/उ-ऊ/ऋ की मात्रा लगा दो।
3. यू/व्/र् को छोड़कर शेष शब्दांश को धन (+) चिहन के आगे लिख दो।

जैसे हमें 'व्यायाम' शब्द का विच्छेद करना है। इस शब्द में आधे अक्षर 'व्' के बाद 'य ' लिखा हुआ है तो उपर्युक्त नियमानुसार हम इस प्रकार विच्छेद कर सकते हैं।

1. सर्वप्रथम आधे अक्षर 'व्' को पूरा 'व' लिख दिया।
2. फिर 'व्' के आगे 'य्' लिखा होने के कारण इस (व) के 'इ' की मात्रा लगा देते हैं तो 'वि' बन जाता है।
3. फिर 'य्' को छोड़कर शेष शब्दांश (आयाम) धन (+) चिहन के आगे लिख देंगे।

इस प्रकार 'व्यायाम' का विच्छेद होगा-

वि + आयाम

इ/ई के स्थान पर 'यू' के उदाहरण

अभि + अर्थी = अभ्यर्थी

अभि + आगत = अभ्यागत

अभि + आस = अभ्यास

अभि + उत्थान = अभ्युत्थान

अभि + उदय = अभ्युदय

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

इति + आदि = इत्यादि

यदि + अपि = यद्यपि

परि + आस = पर्यास

नि + अस्त = न्यस्त

नि + आय = न्याय

नि + ऊन = न्यून

अत्यन्त = अति + अन्त

अत्यावश्यक = अति + 'आवश्यक

अत्यल्प = अति + अल्प

अत्युक्ति = अति + उक्ति

अत्याचार = अति + आचार

सरस्वती + आराधना = सरस्वत्याराधना

रीति + अनुसार = रीत्यनुसार

इति + अर्थ = इत्यर्थ

परि + आवरण = पर्यावरण

व्यर्थ = वि + अर्थ

व्यास = वि + आस

व्यूह = वि + ऊह

अधि + अक्ष = अध्यक्ष

अधि + आपक = अध्यापक

अधि + आत्म = अध्यात्म

प्रति + अक्षि = प्रत्यक्ष

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर

प्रति + आशा = प्रत्याशा

अति + उष्ण = अत्युष्प

अति + अधिक = अत्यधिक

अति + आनन्द = अत्यानन्द

अभि + अन्तर = अभ्यन्तर

सखी + आगमन = सख्यागमन

परि + अन्त = पर्यन्त

प्रति + आघात = प्रत्याघात

प्रति + उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न

परि + आय = पर्याय

प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण

प्रति + आशी = प्रत्याशी .

प्रति + आरोप = प्रत्यारोप

प्रति + ऊष = प्रत्यूष

प्रति + अय = प्रत्यय

Toppersnotes Unleash the topper in you

अधि + आय = अध्याय

अधि + आदेश = अध्यादेश

अधि + अक्ष = अध्यक्ष

देवी + आलय = देव्यालय

राशि + अन्तरण = राश्यंतरण

गति + अनुसार = गत्यनुसार

अति + औचित्य = अत्यौचित्य

देवी + अर्चना = देव्यर्चना

वि + अवधान = व्यवधान

स्त्रिस्ति + अयन = स्वस्त्ययन

द्वि + अर्थी = द्व्यर्थी

त्रि + अक्षर = त्र्यक्षर

वि + उत्पत्ति = व्युत्पत्ति

पर्युषण = परि + उषण

देव्यर्पण = देवी + अर्पण

वाण्यौचित्य = वाणी + औचित्य

नार्युचित = नारी + उचित

अति + आधुनिक = अत्याधुनिक

अति + उत्तम = अत्युत्तम

अति + ऊष्म = अत्यूष्म

अधि + अयन = अध्ययन

परि + अटन = पर्यटन

परि + अवसान = पर्यवसान

प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

प्रति + आवर्तन = प्रत्यावर्तन

प्रति + अन्तर = प्रत्यन्तर

वि + अंजन = व्यंजन

वि + अस्त = व्यस्त

वि + अधि = व्याधि

वि + अभिचार = व्यभिचार

वि + अय = व्यय

वि + अग्र = व्यग्र

वि + असन = व्यसन

वि + आकरण = व्याकरण

वि + आख्यान = व्याख्यान

वि + अष्टि = व्यष्टि

आदि + अन्त = आद्यन्त

प्रापि + आशा = प्राप्त्याशा

अग्नि + अस्त्र = अग्न्यस्त्र

इति + एवम् = इत्येवम्

वि + आकुल = व्याकुल

वि + आप्त = व्याप्त

त्रि + अम्बकम् = त्र्यम्बकम्

इति + अलम् = इत्यलम्

वि + अक्त = व्यक्त

वि + अक्ति = व्यक्ति

अति + औचित्य = अत्यौचित्य

सखी + ऐक्य = सख्यैक्य

स्त्री + उपयोगी = स्त्र्युपयोगी

नदी + अन्त = नद्यन्त

सुधी + उपास्य = सुध्युपास्य

स्त्री + उचित = स्त्र्युचित

पृथ्वी + आधार = पृथ्व्याधार

नारी + उत्थान = नार्युत्थान

नदी + अम्बु = नद्यम्बु

नदी + उद्गम = नद्युद्गम

मही + आधार = मह्याधार

अति + ऊर्ध्व = अत्यूर्ध्व

उ/ऊ के स्थान पर 'व' के उदाहरण-

मान लीजिए हमें ‘अन्वेषण’ शब्द का विच्छेद करना है। इस शब्द में आधे अक्षर ‘न् ’ के बाद ‘व’ अक्षर आया है तो इसका विच्छेद करने के लिए हम निम्न प्रक्रिया अपनाएंगे-

1. सर्वप्रथम आधे अक्षर 'न्' को पूरा लिख देंगे। यथा- अन।
2. फिर 'न्' के आगे 'व' लिखा हुआ है, अतः 'न' के 'उ' की मात्रा लगा देंगे तब 'अनु' रूप बनेगा।
3. फिर 'व्' को छोड़कर शेष शब्दांश 'एषण' को धन (+) चिहन के आगे लिखेंगे। इस प्रकार 'अन्वेषण' शब्द का विच्छेद 'अनु + एषण' होगा।

अन्य उदाहरण-

सु + आगत = स्वागत
सु + अल्प = स्वल्प
सु + अच्छ = स्वच्छ
सु + अस्ति = स्वस्ति
वधू + आगमन = वध्वागमन
वधू + इष्ट = वध्विष्ट
वधू + ईर्ष्या = वध्वीर्ष्या
वधू + अर्थ = वध्वर्थ
भानु + आगमन = भान्वागमन
लघु + आदि = लघ्वादि
मधु + आलय = मध्वालय
वधू + ऐश्वर्य = वध्वैश्वर्य
मनु + अन्तर = मन्वन्तर
वधू + आचरण = वध्वाचरण
साधु + औदार्य = साध्वौदार्य
परमाणु + अस्त्र = परमाण्वस्त्र
अनु + अय = अन्वय
अनु + इति = अन्विति
अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण
अनु + इष्ट = अन्विष्ट
मधु + अरि = मध्वरि
मधु + आचार्य = मध्वाचार्य
साधु + आचरण = साध्वाचरण
साधु + आचार = साध्वाचार
गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य
गुरु + आसन = गुर्वासन
अनु + इत = अन्वित
अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा
अनु + एषण = अन्वेषण
अनु + एषक = अन्वेषक
अनु + ईक्षक = अन्वीक्षक
अनु + एषणा = अन्वेषणा
गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा
गुरु + आदेश = गुर्वादेश
गुरु + ऋण = गुर्वृण
प्रभु + आंगन = प्रभ्वांगन
तनु + अंगी = तन्वंगी
लघु + ओष्ठ = लम्वोष्ठ
धातु + इक = धात्विक
शिशु + ऐक्य = शिश्वैक्य

अपवाद - पू + इत्र = पवित्र (क्योंकि इसमें संस्कृत के अनुसार पुञ् धातु होती है।)

'ऋ' के स्थान पर 'र्' के उदाहरण

अब हमें 'पित्रंश' शब्द का विच्छेद करना है। इस शब्द में आधे वर्ण 'त्' के बाद 'र' मिलकर 'त्र' बना है। अतः विच्छेद करते समय हम निम्न प्रक्रिया अपनाएंगे-

1. सर्वप्रथम हम हलन्त वर्ण 'त्' को पूरा 'त' लिखेंगे।
2. फिर 'त्' के बाद 'र' लिखा होने के कारण इस 'त' के 'ऋ' की मात्रा लगा देंगे। यथा-पितृ
3. फिर 'रू' को छोड़कर शेष शब्दांश 'अंश' को धन (+) चिहन के आगे लिख देंगे।
   इस प्रकार 'पित्रंश' शब्द का सन्धि-विच्छेद 'पितृ + अंश' होगा।

अन्य उदाहरण-

मातृ + अंश = मात्रंश
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा
मातृ + अनुमति = मात्रनुमति
मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश
मातृ + आदेश = मात्रादेश
मातृ + आनन्द = मात्रानन्द
मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
मातृ + अर्थ = मात्रर्थ
दातृ + उदारता = दात्रुदारता
पित्रंश = पितृ + अंश
पित्राज्ञा = पितृ + आज्ञा
पित्रनुमति = पितृ + अनुमति
पित्रुपदेश = पितृ + उपदेश
पित्रादेश = पितृ + आदेश
पित्रानन्द = पितृ + आनन्द
पित्रिच्छा = पितृ + इच्छा
पित्रर्थ = पितृ + अर्थ
वक्तुद्बोधन = वक्तृ + उद्बोधन

अयादि सन्धि

अयादि सन्धि का 'संस्कृत' में सूत्र है:-

"एचोऽयवायाव:"

इस सूत्र में निम्न पद छिपे हुए हैं-

एच् → ए ओ ऐ औ

↓ ↓ ↓ ↓

अय् अव् आय् आव्

अर्थात् ए, ऐ, ओ, औ के बाद असमान (असवर्ण) स्वर आने पर उनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् आदेश हो जाता है।

ने + अन	पो + अन
न् ए अन	प् ओ अन
न् अय् अन	प् अव् अन
नयन	पवन
नै + अक	पौ + अक
न् ऐ अक	प् औ अक
न् आय् अक	प् आव् अक
नायक	पावक

अयादि सन्धि युक्त पदों का सन्धि-विच्छेद करने के लिए याद रखने योग्य तीन बातें:-

यदि किसी शब्द में अय्, अव्, आय्, आव् में से कोई भी एक ध्वनि निकल रही हो तो उस पद का विच्छेद करने के लिए निम्न तरीका काम में ले सकते हैं:-

1. सर्वप्रथम अयू/अव्/आय्/आव् की ध्वनि (आवाज) से पहले जो शब्दांश लिखा हुआ है, उसे लिख दो।
2. फिर 'अय्/अव्/आय्/आव्' की ध्वनि के अनुसार क्रमशः 'ए/ओ/ऐ/औ' की मात्रा लगा दो।
3. इसके बाद अय्/अव्/आय्/आव् की ध्वनि को छोड़कर शेष शब्दांश को धन चिहन (+) के आगे लिख दो।

जैसे हमें 'भावुक' शब्द का सन्धि विच्छेद करना है- इस शब्द में 'आव्' की आवाज निकल रही है तो इसका विच्छेद करने के लिए हम निम्नलिखित प्रक्रिया काम में लेंगे-

1. सर्वप्रथम 'आव्' की ध्वनि से पहले लिखे हुए शब्दांश 'भ' को लिख देंगे।
2. फिर 'आव्' की ध्वनि के कारण इसके 'औ' की मात्रा लगा देंगे। तब 'भौ' हो जाएगा।
3. इसके बाद 'आव्' की ध्वनि को छोड़कर शेष शब्दांश 'उक' को धन चिहन (+) के आगे लिख दो।

   इस प्रकार 'भावुक' का सन्धि-विच्छेद ' भौ+उक' होगा।

अन्य उदाहरण-

चे + अन = चयन	भो + अन = भवन
शे + अन = शयन	हो + अन = हवन
ने + अन = नयन	गो + एषणा = गवेषणा
संचे + अ = संचय	हो + इष्य = हविष्य
विले + अ = विलय	पौ + अक = पावक
विने + अ = विनय	नौ + इक = नाविक
पो + अन = पवन	श्रौ + अन = श्रावण

गै + अक = गायक

गै + इका = गायिका

नै + अक = नायक

नै + इका = नायिका

विधै + अक = विधायक

विजे + अ = विजंय

विधै + इका = विधायिका

विनै + अक = विनायक

दै + अक = दायक

दै + इनी = दायिनी

गै + अन = गायन

धौ + अक = धावक

भौ + अना = भावना

भौ + अन = भावन

श्रो + अन = श्रवण

उदे + अ= उदय

पो + इत्र = पवित्र

सै + अक = सायक (बाण)

विजे + ई = विजयी

विजे + इनी = विजयिनी

भौ + ई = भावी

हो + इ = हवि

वैभो + अ = वैभव

शो + अ= शव

भौ + अक = भावक

गो + ईश = गवीश

घौ + इका = धाविका

श्रौ + अक = श्रावक

भो + अ = भव (संसार)

भौ + अ = भाव

जे + अ = जय

ले + अ = लय

ने + अ = नय

प्रले + अ= प्रलय

नौ + अ = नाव

स्रौ + अ = स्राव

प्रसो + अ= प्रसव

प्रसौ + इका = प्रसाविका

छो + इ = छवि

रामायण शब्द का संधि विच्छेद तीन तरह से होता है:-

(1) यमै + अन = रामायण

राम् ऐ अन

राम् आय् अन

रामायण

(2) राम + अयन = रामायण (दीर्घ संधि भी मान्य है।)

(3) 'न' का 'ण' होने के कारण व्यंजन संधि भी मान्य है।

परन्तु "रामायण" में दीर्व संधि ही सर्वशुद्ध मानी जानी चाहिए।

गुण सन्धि

गुण सन्धि में निम्न तीन कार्य होते हैं-

1. आ/आ + इ/ई = ए
2. अ/आ + ट/ठ = ओ
3. आ/आ + ऋ = अर

जैसे उदाहरण:-

1. अ/आ + इ/ई = ए

टप + इन्द्र = ठपेन्द्र
नर + इन्द्र = नरेन्द्र
मृग + छन्द्र = मृगेन्द्र
शुभ + इच्छा = शुभेच्छा
हित + इच्छा = हितेच्छा
स्व + इच्छा = स्वेच्छा
देव + इन्द्र = देवेन्द्र
सुर + ईश = सुरेश
नर + ईश = नरेश
परम + ईश्वर = परमेश्वर
सर्व + ईक्षण = सर्वेक्षण
उप + ईक्षा = उपेक्षा
महा + इन्द्र = महेन्द्र (महान् के 'न्' का लोप)
राज + इन्द्र = राजेन्द्र (राजन् के 'न्' का लोप)
रमा + ईश = रमेश
राका + ईश = राकेश
मिथिला + ईश = मिथिलेश
द्वारका + ईश = द्वारकेश
न + इति = नेति
देव + ईश = देवेश
मत्स्य + इन्द्र = मत्स्येन्द्र
खग + ईश = खगेश
ब्रज + ईश = ब्रजेश
प्र + ईक्षक = प्रेक्षक
कर्म + इन्द्रिय = कर्मेन्द्रिय
हृषीक + ईश = हृषीकेश (विष्णु)
प्र + इषिति = प्रेषिति
भोजन + इच्छुक = भोजनेच्छुक
सिद्ध + ईश्वर = सिद्धेश्वर
काम + इच्छा = कामेच्छा
यथा + इच्छा = यथेच्छा
गण + ईश = गणेश
दिन + ईश = दिनेश
योग + ईश्वर = योगेश्वर
अंक + ईक्षण = अंकेक्षण
अप + ईक्षा = अपेक्षा
महा + ईश = महेश (महान् के 'न्' का लोप)
राज + ईश = राजेश (राजन् के 'न्' का लोप)
विवाह + इतर = विवाहेतर
जित + इन्द्रिय = जितेन्द्रिय
अन्त्य + इष्टि = अन्त्येष्टि
भारत + इन्दु = भारतेन्दु
गुड़ाका (नींद) + ईश = गुड़ाकेश (अर्जुन)
लोक + ईश = लोकेश
अखिल + ईश = अखिलेश
कमला + ईश = कमलेश
उमा + ईश = उमेश
भुवन + ईश्वर = भुवनेश्वर
घ्राण + इन्द्रिय = घ्राणेन्द्रिय
यथा + इष्ट = यथेष्ट
बाल + इन्दु = बालेन्दु
महा + ईश्वर = महेश्वर
प्र + ईक्षण = प्रेक्षण

2. अ/अ + उ/ऊ = ओ

भाग्य + उदय = भाग्योदय
पर + उपकार = परोपकार
सर्व + उपरि = सर्वोपरि
जन + उपयोगी = जनोपयोगी
रोग + उपचार = रोगोपचार
मरण + उपरान्त = मरणोपरान्त
हित + उपदेश = हितोपदेश
स + उदाहरण = सोदाहरण
प्रवेश + उत्सव = प्रवेशोत्सव
स + उत्साह = सोत्साह
सूर्य + उदय = सूर्योदय
ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय

ToppersNotes Unleash the topper in you

नव + उदय = नवोदय

महा + उदय = महोदय

स्व + उपार्जित = स्वोपार्जित

धन + उपार्जन = धनोपार्जन

दीप + उत्सव = दीपोत्सव

महा + उत्सव = महोत्सव

अन्य + उक्ति = अन्योक्ति

चरम + उत्कर्ष = चरमोत्कर्ष

नव + उत्थान = नवोत्थान

ग्राम + उत्थान = ग्रामोत्थान

सह + उदर = सहोदर

उत्तर + उत्तर = उत्तरोत्तर

नील + उत्पल = नीलोत्पल

गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

यथा + उचित = यथोचित

नव + ऊर्जा = नवोर्जा

दीर्घ + उपल = दीर्घोपल

महा + ऊर्मि = महोर्मि

गंगा + उदक = गंगोदक

आद्य + उपान्त = आद्योपान्त

यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत

पतन + उन्मुख = पतनोन्मुख

रक्षा + उपाय = रक्षोपाय

मद + उन्मत्त = मदोन्मत्त

प्राण + उत्सर्ग = प्राणोत्सर्ग

वेद + उक्त = वेदोक्त

पूर्ण + उपमा = पूर्णोपमा

3. अ/आ + ऋ = अर

देव + ऋषि = देवर्षि

महा + ऋषि = महर्षि

देव + ऋण = देवर्ण

बह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु

वर्षा + ऋतु = वर्षतु

हेमन्त + ऋतु = हेमन्तर्तु

उत्तम + ऋण = उत्तमर्ण

साम + ऋचा = सामच्चा

महा + ऋण = महर्ण

समास + उक्ति = समासाक्ति

अतिशय + उक्ति = अतिशयोक्ति

लोक + उक्ति = लोकोक्ति

पूर्व + उक्त = पूर्वोक्त

हर्ष + उल्लास = हर्षोल्लास

सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम

महा + ऊर्जा = महोर्जा

महा + उरु = महोरु

चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय

समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

वीर + उचित = वीरोचित

विद्या + उन्नति = विद्योन्नति

आत्म + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

करुणा + उत्पादक = करुणोत्पादक

सेवा + उपरान्त = सेवोपरान्त

पद + उन्नति = पदोन्नति

नील + उत्पल = नीलोत्पल

रोग + उपचार = रोगोपचार

साहित्य + उन्नति = साहित्योन्नति

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

राज + ऋषि = राजर्षि

उत्तम + ऋण = उत्तमर्ण

कण्व + ऋषि = कण्वर्षि

शीत + ऋतु = शीतर्तु

बसन्त + ऋतु = बसन्तर्तु

शिशिर + ऋतु = शिशिरर्तु

अधम +ऋण = अधमर्ण

देव + ऋषभ = देवर्षभ

महा + ऋद्धि = महर्द्धि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

दीर्घ सन्धि

जब समान (सवर्ण) स्वरों का परस्पर मेल होता है तो दोनों स्वर मिलकर दीर्घ स्वर हो जाता है । अर्थात् निम्नानुसार सन्धि कार्य होता है:-

1. अ + अ = आ
2. आ + अ = आ
3. इ + इ = ई
4. ई + इ = ई
5. उ + उ = ऊ
6. ऊ + उ = ऊ
7. अ + आ = आ
8. आ + आ = आ
9. इ + ई = ई
10. ई + इ = ई
11. उ + ऊ = ऊ
12. ऊ + ऊ = ऊ

1. अ + अ = आ

नयन + अभिराम = नयनाभिराम
रत्न + अवली = रत्नावली
मध्य + अवधि = मध्यावधि
राष्ट्र + अध्यक्ष = राष्ट्राध्यक्ष
दीप + अवली = दीपावली
परम + अर्थ = परमार्थ
स्व + अभिमान = स्वाभिमान
देह + अन्त = देहान्त
पुण्डरीक + अक्ष = पुण्डरीकाक्ष
शास्त्र + अर्थ = शास्त्रार्थ
रूद्र + अक्षि = रूद्राक्ष
अनुप्रास + अलंकार = अनुप्रासालंकार
दाव + अग्नि = दावाग्नि
वडव + अग्नि = वडवाग्नि
काम + अग्न = कामाग्न
जठर + अग्नि = जठराग्नि
सहस्त + अब्दी = सहस्राब्दी
चरण + अमृत = चरणामृत
पर + अधीन = पराधीन
स्व + अधीन = स्वाधीन
स्व + अध्याय = स्वाध्याय
हिम + अद्रि = हिमाद्रि
पूर्व + अर्द्ध = पूर्वार्ई
उत्तर + अर्द्ध = उत्तरार्द्ध
हिम + अंशु = हिमांशु
सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
पूर्ण + अंक = पूर्णांक
प्राप्त + अंक = प्राप्तांक
अन्त्य + अक्षरी = अन्त्याक्षरी
दीप + अंजलि = दीपांजलि
आत्म + अवलोकन = आत्मावलोकन
जीव + अश्म = जीवाश्म
पद + अवनत = पदावनत
अभय + अरण्य = अभयारण्य
मूल्य + अंकन = मूल्यांकन
ऊह + अपोह = ऊहापोह (अपोह = अप + ऊह)
तीर्थ + अटन = तीर्थाटन
हीन + अवस्था = हीनावस्था
लोहित + अंग = लोहितांग
शकट + अरि = शकटारि
ब्रह्म + अस्त्र = ब्रह्मास्त्र
नयन + अंबु = नयनांबु
परम + अणु = परमाणु
स्व + अर्थ = स्वार्थ
क्रम + अंक = क्रमांक
हिम + अचल = हिमाचल
दण्डक + अरण्य = दण्डकारण्य
गीत + अंजलि = गीताञ्जलि
वीर + अंगना = वीरांगना
विन्ध्य + अचल = विंध्याचल
नील + अंचल = नीलांचल
सह + अनुभूति = सहानुभूति

कर्म + अधीन = कर्माधीन
मठ + अधीश = मठाधीश
कल्प + अन्त = कल्पान्त
पीत + अम्बर = पीताम्बर
रक्त + अम्बर = रक्ताम्बर
नील + अम्बुज = नीलाम्बुज
रक्त + अम्बुज = रक्ताम्बुज
दिवस + अन्त = दिवसान्त
पूर्व + अहन् = पूर्वाहन्

2. अ + आ = आ

पंच + आयत = पंचायत
प्राण + आयाम = प्राणायाम
छात्र + आवास = छात्रावास
रत्न + आकर = रत्नाकर
अल्प + आहार = अल्पाहार
अल्प + आयु = अल्पायु
कार्य + आलय = कार्यालय
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
भोजन + आलय = भोजनालय
वाचन + आलय = वाचनालय
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
हास्य + आस्पद = हास्यास्पद
लोक + आयुक्त = लोकायुक्त
पद + आक्रान्त = पदाक्रान्त
गज + आनन = गजानन
मरण + आसन्न = मरणासन्न
धूम + आव्छादित = धूमाच्छादित
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
हिम + आलय = हिमालय
देव + आलय = देवालय
प्र + आरम्भ = प्रारम्भ
पूर्ण + आहुति = पूर्णाहुति
शुभ + आरम्भ = शुभारम्भ
वृत्त + आकार = वृत्ताकार
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
भय + आक्रान्त = भयाक्रान्त
शस्त्र + आगार = शस्त्रागार
शिव + आलय = शिवालय
पुण्य + आत्मा = पुण्यात्मा
यात + आयात = यातायात
चिर + आयु = चिरायु
गुरुत्व + आकर्षण = गुरुत्वाकर्षण
बहुत + आयत = बहुतायत

3. आ + अ = आ

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
तथा + अपि = तथापि
कक्षा + अध्यापक = कक्षाध्यापक
रचना + अवली = रचनावली
दीक्षा + अन्त = दीक्षान्त
पुरा + अवशेष = पुरावशेष
सुधा + अंशु = सुधांशु
श्राद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
सभा + अध्यक्ष = सभाध्यक्ष
युवा + अवस्था = युवावस्था
परीक्षा + अथी = परीक्षार्थी
रेखा + अंश = रेखांश
निशा + अंत = निशान्त
करुणा + अवतार = करुणावतार
माया + अधीन = मायाधीन
द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
कविता + अवली = कवितावली
जिह्वा + अग्र = जिह्वाग्र
करुणा + अमृत = करुणामृत
शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
मुक्ता + अवली = मुक्तावली

4. आ + आ = आ

विद्या + आलय = विद्यालय
चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय
प्रतीक्षा + आलय = प्रतीक्षालय
द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव
दया + आनन्द = दयानन्द
महा + आत्मा = महात्मा
क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक
रचना + आत्मक = रचनात्मक
कारा + आवास = कारावास
कारा + आगार = कारागार
चिन्ता + आतुर = चिंतातुर
महा + आशय = महाशय
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद
कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी
स्वेच्छा + आचारी = स्वेच्छाचारी

5. इ + इ = ई

रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र
प्रति + इक = प्रतीक
अभि + इष्ट = अभीष्ट
प्रापि + इच्छा = प्रासीच्छा
सुधि + इन्द्र = सुधीन्द्र
प्रति + इति = प्रतीति
हरि + इच्छा = हरीच्छा
अधि + इन = अधीन
प्रति + इत = प्रतीत
अति + इव = अतीव
कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र
मणि + इन्द्र = मणीन्द्र
अति + इत = अतीत
अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय

6. इ + ई = ई

हरि + ईश = हरीश
अधि + ईक्षक = अधीक्षक
परि + ईक्षक = परीक्षक
परि + ईक्षा = परीक्षा
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
वि + ईक्षण = वीक्षण
कपि + ईश = कपीश
अधि + ईक्षण = अधीक्षण
परि + ईक्षण = परीक्षण
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
वारि + ईश = वारीश
क्षिति + ईश = क्षितीश
अधि + ईश = अधीश

7. ई + इ = ई

मही + इन्द्र = महीन्द्र
लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
यती + इन्द्र = यतीन्द्र
फणी + इन्द्र = फणीन्द्र
महती + इच्छा = महतीच्छा
शची + इन्द्र = शचीन्द्र
नदी + ईश = नदीश
गौरी + ईश = गौरीश
फणी + ईश्वर = फणीश्वर
भारती + ईश्वर = भारतीश्वर
नदी + ईश्वर = नदीश्वर

8. उ + उ = ऊ

भानु + उदय = भानूदय
सु + उक्ति = सूक्ति
मृत्यु + उपरांत = मृत्यूपरांत
कटु + उक्ति = कटूक्ति

Toppersnotes
Unleash the topper in you

बहु + उद्देश्यीय = बहूद्देश्यीय
गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
लघु + उत्तर = लघूत्तर
मंजु + उषा = मंजूषा
मधु + उत्सव = मधूत्सव
अनु + उदित = अनूदित

9. उ + ऊ = ऊ

लघु + उर्मि = लघूर्मि
सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
धातु + ऊष्मा = धातूष्मा
बहु + ऊर्जा = बहूर्जा

10.ऊ + उ = ऊ

वधू + उत्सव = वधूत्सव
वधू + उल्लास = वधूल्लास
भू + उपरि = भूपरि
वधू + उक्ति = वधूक्ति
चमू + उत्तम = चमूत्रम
चमू (सेना) + उत्साह = चमूत्साह

11.ऊ + ऊ = ऊ

चमू + ऊर्जा = चमूर्जा
सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि
भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व
भू + ऊष्मा = भूष्मा

ध्यातव्य बिन्दु :- संस्कृत व्याकरण में ' ऋ + ऋ' को मिलाकर दीर्घ ' ॠ' का रूप बनाया जाता है। जैसे : पित् + ऋण = पितृण परन्तु हिन्दी में इस प्रकार की सन्धि प्रचलित नहीं है।

वृद्धि सन्धि

वृद्धि सन्धि में निम्नानुसार दो कार्य होते हैं :-

(i) अ/आ + ए/ ऐ = ऐ

(ii) अ/आ + ओ / औ = औ

एक + एक = एकैक
महा + औषध = महौषध
हित + एषी = हितैषी
महा + औदार्य = महौदार्य
वित्त + एषणा = वित्तैषणा
लोक + एषणा = लोकैषणा
पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा
लोक + ऐश्वर्य = लोकैश्वर्य
विचार + ऐक्य = विचारैक्य
ज्ञान + औषधि = ज्ञानौषधि
सदा + एव = सदैव
वन + औषधि = वनौषधि
तथा + एव = तथैव
देव + औदार्य = देवौदार्य
वसुधा + एव = वसुधैव
जल + ओच = जलौघ
धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य
विश्व + ऐक्य = विश्वैक्य
महा + ऐशवर्य = महैश्वर्य
मत + ऐक्य = मतैक्य
जल + ओक = जलौक
ज्ञान + ऐश्वर्य = ज्ञानैश्वर्य
भाव + औचित्य = भावौचित्य
देव + ऐश्वर्य = देवैश्वर्य
भाव + औदार्य = भावौदार्य
स्व + ऐच्छिक = स्वैच्छिक
परम + औदार्य = परमौदार्य
गंगा + ऐश्वर्य = गंगैश्वर्य
यथा + औचित्य = यथौचित्य
परम + ओज = परमौज
महा + ओजस्वी = महौजस्वी
परम + औषध = परमौषध

वन + औषध = वनौषध

मंत्र + औषधि = मंत्रौषधि

प्र + औद्योगिकी = प्रौद्योगिकी

गंगा + ओघ = गंगौघ

यथा + औचित्य = यथौचित्य

महा + औत्सुक्य = महौत्सुक्य

महा + ऐन्द्रजालिक = महैन्द्रजालिक

परम + ऐन्द्रजालिक = परमैन्द्रजालिक

नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य

पूर्व + औपनिवेशिक = पूर्वोपनिवेशिक

वृथा + औदार्य = वृथौदार्य

स्वर सन्धि में अपवाद

1. प्र + ऊढ़ = प्रौढ़ (ओ के स्थान पर औ हो गया है) अर्थात् गुण सन्धि न मानकर वृद्धि सन्धि मानी जाती है।
2. अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ/अधरौष्ठ (दोनों रूप शुद्ध है)
3. दन्त + ओष्ठ्य = दन्तोष्ठ्य/दन्तौष्ट्र्य (दोनों रूप शुद्ध है)
4. शुद्ध + ओदन = शुद्धोदन (वृद्धि सन्धि नहीं होती, केवल संयोग होता है)
5. अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी (गुण सन्धि न होकर वृद्धि सन्धि मानी जाती है।)

   सुख + ऋत = सुखार्त, स्व + ईरिणी = स्वैरिणी, स्व + ईर = स्वैर, दश + ऋण = दशार्ण, प्र + ऋण = प्रार्ण, वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण, कम्बल + ऋ = कम्बलार्ण, वसन + ऋण = वसनार्ण
6. 'गवाक्ष' एवं 'गवेन्द्र' शब्दों की दो-दो सन्धियाँ मान्य हैं-

   गवाक्ष = गो + अक्षि (अक्ष) (अयादि)

   गव + अक्षि (अक्ष) (दीर्घ)

   गवेन्द्र = गो + इन्द्र (अयादि)

   गव + इन्द्र (गुण)

नोट:- इन दोनों शब्दों में अपवादस्वरूप ओ 'अव्' में न बदलकर 'अव' में बदल जाता है।

स्वर सन्धि के विशेष नियम

जिन शब्दों में अन्त में 'अक्ष' अथवा 'रात्र' पदांश लिखा हुआ हो तो सन्धि विच्छेद करते समय 'अक्ष' का 'अक्षि' तथा 'रात्र' का 'रात्रि' हो जाता है।

जैसे :-

प्रत्यक्ष- प्रति + अक्षि

सहस्त्राक्ष- सहस्त्र + अक्षि

दिवारात्र- दिवा + रात्रि

नवरात्र- नव + रात्रि

अर्थात् सन्धि होने पर अन्तिम 'इ' के स्थान पर 'अ' हो जाता है।

यदि किसी शब्द में अ, इ, य, इक, एय, अयन, आयन, आदि प्रत्यय जोड़कर सन्धि कार्य हो तो शब्द के प्रथम स्वर में निम्नानुसार परिवर्तन हो जाता है-

(i) प्रथम स्वर ' अ' होने पर आ में बदल जाता है।

मनु + अ = मानव

दशरथ + इ = दाशरथि

अदिति + य = आदित्य

स्वस्थ + य = स्वास्थ्य

शरीर + इक = शारीरिक

अंजनि + एय = आंजनेय

नर + आयन = नारायण

यदु + अ = यादव

मरुत + इ = मारुति

मधुर + य = माधुर्य

समाज + इक = सामाजिक

गंगा + एय = गांगेय

वत्स्य + आयन = वात्स्यायन

(ii) प्रथम स्वर इ/ई/ए होने पर 'ऐ' में बदल जाता है-

इतिहास + इक = ऐतिहासिक
नीति + इक = नैतिक
एक + य = ऐक्य
वेद + इक = वैदिक
ईश्वर + य = ऐश्वर्य
निराशा + य = नैराश्य

(iii) प्रथम स्वर उ/ऊ/ओ होने पर ' औ' में बदल जाता है-

उद्योग + इक = औद्योगिक
सुन्दर + य = सौन्दर्य
कुंती + एय = कौन्तेय
भूत + इक = भौतिक
योग + इक = यौगिक
कुशल + अ = कौशल

(iv) प्रथम स्वर ' ऋ' होने पर ' आरू' में बदल जाता है-

गृहस्थ + य = गार्हस्थ्य
पृथक + य = पार्थक्य

3. निम्न शब्दों की सन्धि करने पर प्रथम शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व होने पर दीर्घ स्वर में बदल जाता है।

विश्व + मित्र = विश्वामित्र
सत्य + नाश = सत्यानाश
प्रति + घात = प्रतीघात
मार + मारी = मारामारी
दीन + नाथ = दीनानाथ
प्रभु + दयाल = प्रभूदयाल
मूसल + धार = मूसलाधार
हाथ + हाथ = हाथोंहाथ
प्रति + कार = प्रतीकार

नोट:- 'प्रतीघात' व 'प्रतीकार' शब्द संस्कृत व्याकरण में ही मान्य हैं। हिन्दी में ये दोनों शब्द ह्रस्व 'इकार' का प्रयोग करके ही लिखे जाते हैं। यथा- प्रतिघात, प्रतिकार

4. निम्न शब्दों में सन्धि कार्य करने पर प्रथम शब्द के अन्तिम स्वर/व्यंजन का लोप हो जाता है-

पतत् + अंजलि = पतंजलि
सार + अंग = सारंग
सीम + अन्त = सामन्त (सिर को मॉग)
कर्क + अन्धु = कर्कन्धु
('सीम + अन्त = सीमान्त' सन्धि भी मान्य है, लेकिन उसका अर्थ 'हद' हो जाता है।)
अप + अंग = अपंग (किसी अंग से रहित)
शक + अन्धु = शकन्धु
(अप + अंग = अपांग भी मान्य है, जिसका अर्थ होता है आँख की कोर)
इसी प्रकार- मनस् + ईष = मनीष
मनस् + ईषा = मनीषा
कुल + अटा = कुलटा
मृत + अण्ड = मार्तण्ड (सूर्य)

व्यंजन सन्धि

परिभाषा- जब किसी व्यंजन के साथ व्यंजन का अथवा स्वर का मेल होता है, वहाँ व्यंजन सन्धि मानी जाती है। व्यंजन संधि में निम्न नियम माने जाते हैं-

जश्त्व सन्धि (घोष व्यंजन सन्धि)

क्/च्/ट्/त्/प् + किसी भी वर्ग का तीसरा/चौथा अक्षर/य/र/ल/व/ह/सभी स्वर।

↓ ↓ ↓ ↓ ↓
गु/ज्/ड्/द्/ब्

नियम- संधि करने पर वर्ग का प्रथम अक्षर तीसरे अक्षर में बदल जाता है तथा विच्छेद करने पर तीसरा अक्षर पहले अक्षर में बदल जाता है।

'क् ' के स्थान पर 'ग्' होना

वाक् + ईश = वागीश

वाक् + ईश्वर = वागीश्वर

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

वाक् + जाल = वाग्जाल

वाक् + देवी = वाग्देवी

वाक् + दान = वाग्दान

वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता

वाक् + वज्र = वाग्वज्र

वाक् + विलास = वाग्विलास

सम्यक् + ज्ञान = सम्यग्ज्ञान

सम्यक् + दर्शन = सम्यग्दर्शन

ऋक् + वेद = ऋग्वेद

दिक् + गज = दिग्गज

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

दिक् + अन्त = दिगन्त

दिक् + ज्ञान = दिग्ज्ञान

दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

दिक् + विजय = दिग्विजय

दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती

दिक् + वधू = दिग्वधू

वणिक् + वर्ग = वणिग्वर्ग

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

दिक् + भ्रमित = दिग्भ्रमित

'चू' के स्थान पर 'जू' होना

अच् + आदि = अजादि

अच् + अन्त = अजन्त

'ट्' के स्थान पर ' ड' होना

षट् + आनन = षडानन

षट् + अंग = षडंग

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

षट् + यंत्र = षड्यंत्र

षट् + राग = षड्राग

षट् + विकार = षड्विकार

षट् + अक्षर = षडक्षर

षट् + गुण = षड्गुण

त् के स्थान पर ' द् ' होना

जगत्+ईश=जगदीश

जगत् + अम्बा = जगदम्बा

जगत् + आत्मा = जगदात्मा

जगत्+गुरु=जगद्गुरु

जगत् + आलोक = जगदालोक

जगत्+आनंद=जगदानन्द

जगत्+आचार्य=जगदाचार्य

महत् + अर्थ = महदर्थ

महत् + आकाश = महदाकाश

महत् + ज्ञान = महद्ज्ञान

भवत् + ईय = भवदीय

वृहत् + आकार = वृहदाकार

भगवत् + गीता = भगवद्गीता

भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति

कृत् + अन्त = कृदंत

सत्+आचरण=सदाचरण

सत् + आशय = सदाशय

सत् + गुण = सद्गुण

सत् + उपदेश = सदुपदेश

सत् + धर्म = सद्धर्म

सत् + गति = सद्गति

सत् + आत्मा = सदात्मा

सत् + भाव = सद्भाव

सत् + बुद्धि = सद्बुद्ध

सत् + व्यवहार = सद्व्यवहार

सत् + उपयोग = सदुपयोग

सच्चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द

श्रीमत् + भागवत = श्रीमद्भागवत

चित् + रूप = चिद्रूप

सत् + वंश = सद्वंश

'प्' के स्थान पर ' ब् ' होना

तिप्+आदि=तिबादि

अप् + जात = अब्जात

अप्+ज=अब्ज (कमल)

सुप् + आदि = सुबादि

सुप् + अन्त = सुबन्त

अप् + द = अब्द (बादल)

2. अघोष (चर्त्व सन्धि) व्यंजन सन्धि—यदि हलन्त ' द् ' के बाद क/त/थ/प/स हो तो सन्धि करते समय ' द् ' के पर 't' हो जाता है।

द् + क त थ प स
↓
त्

जैसे : —उद्+तीर्ण=उत्तीर्ण

उद् + तम = उत्तम

उद् + कोच = उत्कोच (रिश्वत)

उद्+सव=उत्सव

उद्+स्थान=उत्थान

उद्+कट=उत्कट

उद्+सर्ग=उत्सर्ग

उद् + कृष्ट = उत्कृष्ट

उद् + तर = उत्तर

उद् + साह = उत्साह

उद् + क्षिप्त = उत्क्षिप्त

उद् + तेजक = उत्तेजक

उद् + कीर्ण = उत्कीर्ण

उद् + पन्न + उत्पन्न

तद् + सम = तत्सम

उपनिषद् + काल = उपनिषत्काल

संसद् + सत्र = संसत्सत्र

3. अनुनासिक व्यंजन सन्धि-

(i) पूर्व सवर्ण (अनुनासिक) सन्धि

क्/च्/ट्/त्/द्/प् +किसी भी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ङ् ज् ण् न् न् म् (विशेषतः न्/म्)

जैसे :-

वाक् + मय = वाङ्मय

वाक् + निपुण = वाङ्निपुण

दिक् + नाग = दिङ्नाग

दिक् + मूढ़ = दिङ्मूढ़

दिक् + मुख = दिङ्मुख

दिक् + नाथ = दिङ्नाथ

उद् + नति = उन्नति

उद् + मूलन = उन्मूलन

उद् + मत्त = उन्मत्त

उद् + मुख = उन्मुख

उद् + माद = उन्माद्

पद् + नग = पन्नग

उद् + नयन = उत्नयन

तद् + मय = तन्मय

अप् + मय = अम्मय

उपनिषद् + काल = उपनिषत्काल

प्राक् + मुख = प्राङ्मुख

ऋक् + मंत्र = ऋङ्मंत्र

षट् + मास = षण्मास

षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति

षट् + मुख = षण्मुख

षट् + मातुर = षण्मातुर

सत् + नारी = सन्नारी

सत् + मति = सन्मति

सत् + निधान = सन्निधान

सत् + निधि = सन्निधि

जगत् + माता = जगन्माता

जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी

जगत् + निवास = जगन्निवास

विद्वत् + मण्डली = विद्वन्मण्डली

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नोट:- यदि 'द्' से पहले मूर्धन्य स्वर (ऋ) आता है तो 'द् ' के स्थान पर ' नू' नहीं होकर 'ण्' हो जाता है। जैसे

मृद् + मय = मृण्मय मृद् + मयी = मृण्मयी मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति

(ii) पर सवर्ण (अनुनासिक) सन्धि-

[म् + क से लेकर म तक का कोई वर्ण

हो तो हलन्त 'म्' के स्थान पर ' + ' चिह्न के आगे आने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। लेखन (लिपि) में पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ऊपर बिंदु) भी मान्य है।

सम् + कलन = सङ्कलन (संकलन)

सम् + क्रान्ति = सङ्क्रान्ति (संक्रान्ति)

सम् + चित = सञ्चित (संचित)

सम् + गम = सङ्गम (संगम)

सम् + कर = सङ्कर (संकर)

सम् + चालन = सञ्चालन (संचालन)

सम् + चार = सञ्चार (संचार)

सम् + घात = सङ्घात (संघात)

सम् + गठन = सङ्गठन (संगठन)

सम् + जय = सञ्जय (संजय)

सम् + तोष = सन्तोष (संतोष)

सम् + तुष्ट = सन्तुष्ट (संतुष्ट)

सम् + देश = सन्देश (संदेश)

सम् + धारण = सन्धारण (संधारण)

सम् + न्यासी = सन्यासी

किम् + नर = किन्नर

सम् + निहित = सन्निहित

सम् + जीवनी = सञ्जीवनी (संजीवनी)

सम् + ताप = सन्ताप (संताप)

सम् + देह = सन्देह (संदेह)

सम् + धि = सन्धि (संधि)

सम् + निवेश = सन्निवेश

सम् + निकट = सन्निकट

सम् + मान = सम्मान

सम् + जीवनी = सञ्जीवनी/संजीवनी

नोट:- 'सन्नयासी' व 'संन्यासी' में से 'सन्यासी' रूप को ही शुद्ध माना जाता है क्योंकि जहाँ हलन्त 'म्' के तुरन बाद वर्ग का पंचमाक्षर (विशेषत: न/म) हो तो वहाँ 'म्' को अनुस्वार में नहीं बदला जाता है। हलन्त 'म्' को आंगे आने वाले पंचमाक्षर के समान वर्ण में बदल दिया जाता है।

जैसे:- सम् + निहित = सन्निहित सम् + मान = सम्मान

सम् + निकट = सन्निकट सम् + न्यासी = सन्यासी

सम् + मोहन = सम्मोहन

अलम् + कार = अलङ्कार/अलंकार

अलम् + कृति = अलङ्कृति/अलंकृति

तीर्थम् + कर = तीर्थङ्कर/तीर्थंक

दम् + ड = दण्ड/दंड

अलम् +कृति = अलङ्कृति/अलंकृति

चिरम् + जीवी = चिरञ्जीवी/चिरंजीवी

मृत्युम् + जय = मृत्युञ्जय/मृत्युंजय

खम् + ड = खण्ड/खंड

नोट :- यदि हलन्त 'म्' के आगे य र ल व श ष स ह हो तो सन्धि करते समय हलंत 'म्' अनुस्वार में ही बदलवा है-

सम् + योग = संयोग

स्वयम् + वर = स्वयंवर

सम् + वाद = संवाद

सम् + लाप = संलाप

सम् + शय = संशय

सम् + सार = संसार

सम् + यम = संयम

सम् + रचना = संरचना

सम् + विधान = संविधान

सम् + स्मरण = संस्मरण

सम् + रक्षक = संरक्षक

सम् + हार = संहार

नोट:- यदि 'समू' उपसर्ग के आगे 'कृ' धातु से बनने वाले शब्द यथा करण, कृति, कार, कृत आदि आवें तो सीमिं करते समय हलन्त 'म्' का तो अनुस्वार हो जाता है तथा उपसर्ग एवं शब्द के बीच में दन्त्य 'स्' का आगम हो जाठ है। जैसे-

सम् + कृत = संस्कृत
सम् + कृति = संस्कृति
सम् + कर्ता = संस्कर्ता
सम् + कार = संस्कार
सम् + करण = संस्करण
सम् + कार्य = संस्कार्य

'परि' उपसर्ग के आगे 'कृ' धातु से बनने वाले शब्द यथा कृत, कृति, कार, करण आदि आने पर उपसर्ग तथा शब्द के बीच में मूर्धन्य ' q ' का आगम हो जाता है।

परि + कृति = परिष्कृति
परि + कर्ता = परिष्कर्ता
परि + करण = परिष्करण
परि + कार्य = परिष्कार्य

तू/द् की सन्धि-

(i) तू/द् + च = च्च

उद् + चारण = उच्चारण
सत् + चरित्र = सच्चरित्र
शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र
सत् + चेष्टा = सच्चेप्टा

(ii) त्/द् + छ = च्छ

उद् + छिन्न = उच्छिन्न
उद् + छेद = उच्छेद

(iii) तू/द् + ज = ज्ज

सत् + जन = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी
यावत् + जीवन = यावज्जीवन
उद् + ज्वल = उज्वल
उद् + जयिनी = उज्जयिनी
बृहत् + जन = बृहज्जन

(iv) त्/द् + झ = ज्झ

महत् + झंकार = महज्झंकार
बृहत् + झंकार = बृहज्झंकार

(v) त्/द् + ट = ट्ट

तद् + टीका = तट्टीका
बृहत् + टीका = बृहट्टीका

(vi) त्/द् + ड = ड्ड

उद् + डयन = उड्डयन
भवत् + डमरु = भवड्डमरु

(vii) तू/द् + ल = ल्ल

उद् + लेख = उल्लेख
उद् + लास = उल्लास
उद् + लंघन = उल्लंघन
तद् + लीन = तल्लीन
विद्युत् + लेखा = विद्युल्लेखा

(viii) त्/द् + ह = द्ध

उद् + हार = उद्धार/उद्धार
उद् + हत = उद्धृत/उद्धृत
उद् + हरण = उद्धरण/उद्धरण
तद् + हित = तद्धित/तद्धित
पत् + हति = पद्धति/पद्धति
मरुत् + हारिणी = मरुद्धारिणी/मरुद्धारिणी

(ix) त्/द् + श = च्छ

उद् + श्वास = उच्छ्वास
उद् + श्रृंखल = उच्छंखल
उद् + शास्त्र = उच्छास्त्र
उद् + शिष्ट = उच्छिष्ट
श्रीमत् + शरद् + चन्द्र = श्रीमच्छरच्चन्द्र
सत् ' + शास्त्र = सच्छास्त्र
सत् + शासन = सच्छाशन
शरद् + शशि = शरच्छशि
तद् + शिव = तच्छिव

Toppersnotes
Unleash the topper in you